THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI MOHD. SHAFI QURESHI): (a) Yes.

(b) One.

(c) The question of promoting him against the reserved quota will be considered in due course.

12.18 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

DISAPPEARANCE OF HIGH-POWERED SOPHISTICATED TELESCOPE FROM DEFENCE INSTALLATION AT CHANDIPORE, ORISSA

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (ग्वालियर): अध्यक्ष महोदय, जो, मैं अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर रक्षा मंत्री का ध्यान दिलाता हू और प्रार्थना करता हू कि वह इस बारे मे एक वक्तव्य दे :

"चन्डीपुर, उडीसा मे एक रक्षा सस्थान के स्टोर से 1,80,000 रुपये के मूल्य का शक्तिशाली आधुनिक दूरबीन के गायब हो जाने का समाचार।"

रक्षा मंत्रालय (रक्षा उत्पादन) में राज्य मंत्री (श्री विद्याचरण शुक्ल): अध्यक्ष महोदय, बालासोर (उडीसा) के परीक्षण एव प्रयोग प्रतिष्ठान मे 11 अप्रैल, 1974 को एक विशेष प्रकार की दूरबीन लापता पाई गई। इस उपस्कर को लगभग 36,000 रुपये के मूल्य पर आयात किया गया था। इस मामले की पुलिस को तत्काल सूचना दी गई और विभागीय जाच अदालत भी बुलाई गई है। केन्द्रीय जाच ब्यूरो को भी इस मामले में जांच-पड़ताल करने का अनुरोध किया गया है। उनकी रिपोर्ट की प्रतीक्षा है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: अध्यक्ष जी, मैं समाचार समितियों और समाचार-पत्रो को बधाई देना चाहता हूं कि जिन के माध्यम से यह समाचार हम तक पहुंचा है। लेकिन उस समाचार के अनुसार चोरी 13 मार्च को हुई। इसी प्रतिष्ठान के एक प्रवक्ता ने सवाद समितियो को बताया कि 13 मार्च को यह दूरबीन गायब पाई गई। लेकिन मत्री महोदय का कहना है कि यह चोरी 11 अप्रैल को हुई। अब मैं उन के उत्तर की और उन्ही के प्रतिष्ठान के एक प्रवक्ता ने जो कुछ कहा है, उसकी सगति नही बिठा पा रहा हू।

दूसरी बात यह है कि चोरी 11 अप्रैल को हुई, आज 23 अप्रैल है। इस बीच मे जो जाच की गई उस का क्या परिणाम निकला? जाच गम्भीरता से की जा रही है, यह स्पष्ट है। पुलिस को तत्काल सूचना दी गई। मैं "तत्काल" शब्द पर जोर देना चाहता हू। अगर सूचना तत्काल दी गई तो कार्यवाही भी तत्काल हुई होगी और नतीजा भी थोडा बहुत तत्काल आया होगा। लेकिन उस से सदन को अवगत नही किया जा रहा है।

मामले की गम्भीरता इस से भी झलकती है कि एक विभागीय जाच अदालत भी बिठाई गई है और सब से बड़ी बात यह है कि सेन्ट्रल ब्यौरो आफ इन्वेस्टीगेशन, सी० बी० आई० को भी तस्वीर मे लाया गया है। तो इतनी सारी शक्तिशाली जाच करने के बाद पिछले कुछ दिनो मे जो नतीजे निकले हैं, उन को सदन जानना चाहेगा।

तीसरी बात यह है कि यह साधारण चोरी का मामला नही मालूम होता है। अगर साधारण चोरी का मामला होता, तो सी० बी० आई० को चित्र मे लाने की आवश्यकता नही थी। यह प्रतिष्ठान परीक्षा एवं प्रयोग का प्रतिष्ठान है। जिन शस्त्रों का, जिन घातक शस्त्रों का हम निर्माण करते हैं, वे कितने सफल होते हैं,

इस का परीक्षण यहां किया जाता है। समुद्र के किनारे के निकट और समुद्र के भीतर होने वाले परिक्षणों को भी दूरबीन द्वारा देखा जा सके, इस दृष्टि से भी इस दूरबीन का महत्व था। सवाल यह है कि क्या इस तरह के उपकरणों की हिफाजत की, देखभाल की, चौकीदारी की कोई व्यवस्था नहीं है? दूरबीन छोटी नहीं थी। कोई उसे जेब में रख कर नहीं ले जा सकता था। वह बड़ी चीज थी और उसे ताले में रखा जाता होगा, बाहर पहरा रहता होगा? किसी के लिए यह सम्भव कैसे हुआ कि वह इस तरह के उपकरण को बाहर ले जाय। मंत्री महोदय ने इस बारे में कोई प्रकाश नहीं डाला है। यह भी ताज्जुब की बात है कि चोरी हो गई लेकिन अभी तक किसी कर्मचारी के खिलाफ कार्यवाही नहीं हुई?

श्री एस० एम० बनर्जी (कानपुर): कर्मचारी ने चोरी नहीं की होगी। इतना बड़ा सामान तो अफसर ही ले जा सकता है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी मैं अफसरों को भी कर्मचारी समझता हूं। बात यह है कि हमारे बनर्जी साहब जब एक कर्मचारी थे, तो मैं इन को अफसर ही समझता था . . (व्यवधान)।

अध्यक्ष जी, किसी के खिलाफ कार्यवाही नहीं हुई, किसी को मुअत्तल नहीं किया गया। हम जानना चाहेंगे, किसी से पूछताछ की गई है? उस में क्या निकला है। यह मामला साधारण मामला नहीं है . . . (व्यवधान) . . .

मैं उधर ही आ रहा हूं। मुझे पता लगाना है कि क्या इस में यूथ कांग्रेस का हाथ तो नहीं है? क्या आर०एस०एस० की गतिविधियों को देखने के लिए वह दूरबीन की जरूरत तो नहीं अनुभव कर रहे हैं . . . (व्यवधान) . . .

अध्यक्ष महोदय, क्या यह सच है कि इस प्रतिष्ठान में काफी समय से कुछ असंतोष है मजदूरों में, कर्मचारियों में और प्रबन्धकों में कुछ तनाव है? क्या यह सच है कि यह मामला साधारण चोरी का मामला नहीं है? इस में कुछ ऐसे तत्व शामिल हैं जो देश की सुरक्षा के लिए भी खतरा पैदा कर सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय, हम यह भी जानना चाहेंगे कि यह कीमत के बारे में जो प्रेस रिपोर्ट में और मंत्री महोदय के वक्तव्य में अन्तर-विरोध है, इस का क्या कारण है? समाचारपत्र में जो कीमत छपी है वह प्रतिष्ठान के प्रवक्ता द्वारा बताई गई कीमत है लेकिन कीमत के बारे में सवाल स्पष्ट हो जाएगा अगर मंत्री महोदय इस बारे में प्रकाश डाल दें कि यह दूरबीन कब मंगाई गई थी और किस देश से मंगाई गई थी और यहां आने पर उस की कीमत क्या पड़ी।

अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं कि इतने प्रश्न ही पर्याप्त हैं।

श्री विद्याचरण शुक्ल अध्यक्ष महोदय, मैं बहुत अनुग्रहीत हूं माननीय सदस्य का, जो उन्होंने इस सवाल को यहां उठाया क्योंकि हम लोग भी इस बात को मानते हैं कि यद्यपि यह कोई बहुत गम्भीर चीज नहीं थी और कुछ ऐसी बात नहीं थी जो सुरक्षा की दृष्टि से बहुत गुप्त चीज मानी जाए, ऐसा कोई यह उपकरण नहीं था, तो भी इस तरह के एक प्रतिष्ठान में इस तरह की चोरी की घटना को कभी, किसी प्रकार से हल्के रूप में नहीं लेना चाहिए।

ज्यों ही कल हम लोगों को इस का नोटिस मिला और कल जो हम ने बालासोर से टेलीफोन के द्वारा पूछताछ की, तो हम को यह बताया गया कि सुरक्षा मंत्रालय और रक्षा-उत्पादन विभाग, जिस के अन्तर्गत

[श्री विद्याचरण शुक्ल]

यह काम होता है, के किसी प्रवक्ता ने किसी प्राकर का कोई स्टेटमेंट नही दिया और जो ख़बर अख़बार ने छापी है 13 मार्च इत्यादि के बारे मे, वह सही नही है । मै उस का विवरण बताता हू । इस दूरबीन को 1968 मे मगाया गया था आज से लगभग छ. साल पहले । फारेन एक्सचेन्ज के रेट के हिसाब से उस समय जो कीमत थी, उस कीमत का मैंने निर्देश दिया है । इस उपकरण के दो भाग थे । एक तो है दूरबीन और दूसरा है इस का एक साइट । इस को इटारसी मे जो प्रूफ रेंज हम ने स्थापित किया था, उस में उपयोग करने के लिए मगाया गया था । जब यह उपकरण आया, उस वक्त इटारसी का रेज तैयार नही थी । इसलिए इसको बालासोर भेज दिया था जांच पड़ताल करने के लिए कि इस का जो यंत्र है, वह ठीक काम कर रहा है या नही इस के काम को सतोषजनक पाया गया । वहा काम होता रहा । जब इटारसी का प्रूफ़ रेंज तैयार हो गया, तो काफ़ी इस के बारे मे बातचीत, खतो-किताबत चली कि इस को बालासोर मे रहने दिया जाए या इटारसी मे रखा जाए । बालासोर वाले इस को छोडना नही चाहते थे और इटारसी वाले इस को मगाना चाहते थे । अन्तत हम ने वह तय किया कि इस को इटारसी भेजा जाए और इसीलिए इस के प्रूफ़ रेन्ज को निकाल कर इस को बालासोर के जनरल स्टोर में लाया गया और पैक किया गया, जिस से इटारसी का जो व्यक्ति इस को ले जाने के लिए आने वाला था, उस को उसे दे दिया जाए क्योंकि हम नही चाहते थे कि इसे रेल या पार्सल के द्वारा भेजा जाए । इस तरह से एक व्यक्ति के साथ इस को भेजने का प्रबन्ध किया गया और वह सज्जन वहां पर 13 तारीख को पहुंचे लेने के लिए क्योंकि हम चाहते थे कि 14 अप्रैल तक यह चीज इटारसी में पहुंच जाए । जब बक्सा खोला गया, तो दूरबीन गायब थी, वह मिली नही । यह चीज 11 अप्रैल को हुई ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हो सकता है कि 13 मार्च को गायब हुई हो ?

श्री विद्याचरण शुक्ल : 13 मार्च को वह काम मे लाई जा रही थी, उस को हटाया नही गया था । वह हटाई गई थी चन्द दिन पहले ही और ला कर उस को जनरल स्टोर मे बन्द कर दिया गया था बक्से मे । इसलिए 13 मार्च को गायब होने की सम्भावना नही है क्योंकि कुछ दिन पहले उस को पैक कर के जनरल स्टोर मे रखा गया था ताकि जैसे ही वह सज्जन आएं, वे उस को ले कर जा सकें ।

जैसे ही यह दुर्घटना हमारे सामने आई, तो तत्काल , जैसा कि माननीय सदस्य ने 'तत्काल ' शब्द पर जोर दिया, हम ने इस की सूचना पुलिस को दी क्योकि हम इस बात की गम्भीरता को समझते है और हमारे जो सैनिक अधिकारीगण और जो वैज्ञानिक है उन्होने भी यह ठीक समझा कि उडीसा की जो ब्राच है सी०बी०आई० की, उस को इस मे रखा जाए, जिस से कि वह जाच ठीक से हो सके । हमारी जो प्रक्रिया है, उस के अनुसार एक विभागीय जाच कमीशन की नियुक्ति भी तत्काल कर दी गई, जिस से हर तरह की चीज का हर स्तर पर पता लग सके कि ऐसी बात क्यों हुई और क्योंकि इस में ज्यादा समय नहीं गुजरा है, इसलिए गम्भीरता से और बारीकी से जांच करना जरूरी है, इस से पहले कि किसी निष्कर्ष पर पहुंचे । अभी किसी निष्कर्ष पर नही पहुंचे हैं और जैसे ही किसी निष्कर्ष पर पहुचेंगे, तो इस की सूचना आज नही, जब भी निष्कर्ष आएगा, सदन को दे देंगे । इस में कोई आपत्ति की बात नही है । पर जब तक कोई नतीजा न निकले तब तक किसी के खिलाफ़ चाहे वह कर्मचारी हो और चाहे वह अधिकारी हो, माननीय सदस्य भी इस बात से सहमत होंगे, कोई कार्यवाही करना उचित नहीं

होगा । जब हमे सब चीजो का पता लग जाएगा, तो हम उस के ऊपर कार्यवाही करेंगे ।

कीमत जो हम ने बताई है, वह 1968 की कीमत है और यह वह कीमत है जिस पर हम ने उस को खरीदा था और जो मैं ने मुख्य वक्तव्य मे बताई है ।

यह बात सही है कि वहा पर कुछ असतोष कर्मचारियो और अधिकारियो के बीच मे रहा है और उस को हम दूर करने का प्रयत्न करते रहे है । मैं समझता हू कि वहा के कर्मचारी बहुत अच्छा देश का काम कर रहे है । उनकी कुछ कठिनाइया हो सकती है, परेशानिया हो सकती है। उनको वे आपस मे बैठ कर तय कर लेते हैं । असतोष और तनाव यदि है तो उसके होते हुए भी काम मे वहा किसी प्रकार की अभी तक बाधा नही आई है । जब कोई आती भी है तो उसको हम दुरुस्त करते रहते है।

जहा तक सुरक्षा का वहा प्रश्न है वहा काफी लोग इस काम के लिए रखे गए है । करीब ढाई मील के क्षेत्र मे इस्टेबलिश्मेन्ट का काम होता है । वहा कुछ बाउंड्री वायर फैंसिंग है, और कुछ दीवार है, चौकीदारो के रहने का स्थान है । सब कुछ होते हुए भी जो दुर्घटना हुई है इसका मतलब है कि अन्दर ही किसी ने गड़बड की है या हमारी व्यवस्था मे कुछ खामी हो सकती है । इस चीज का पता लगा कर फिर उसके ऊपर कार्रवाई की जाएगी और जहा कही खामी होगी या दोष होगा उसको दूर दिया जाएगा । जो दोषी पाए जाएगे उनको हम सजा भी देगे ।

श्री सतपाल कपूर (पटियाला) मिलिट्री, नेवल और एयर फोर्स इनकी जहा तक सुप्रैमेसी का ताल्लुक है 1965 की जग के बाद वह इंटरनैशनली एस्टैबलिश होती रही है । इस बात की हम सब को खुशी है । लेकिन मिलिट्री स्टोर्ज का जहा तक ताल्लुक है उसके बारे मे कई बार तरह तरह की बाते सुनने मे आती हैं । हमारे यहा पटियाला मे भी स्टोर है । और भी कई जगह है । आम तौर पर छोटी मोटी चोरिया के वाकात होते रहते ह, डीजल की, पैट्रोल, टायर ट्यूब्ज आदि की चोरिया होती रहती हैं ।

एक माननीय सदस्य कानपुर में बम पकडे गए ।

श्री सतपाल कपूर पता नही मिलिट्री के थे या प्राइवेट थे ।

मैं तजवीज करना चाहता हू कि जो हमारा सिक्योरिटी स्टाफ है या सुपरविजन का तरीका है उसको हम मजबूत करे उसकी तरफ ज्यादा ध्यान दे ताकि इस तरह की रिपोर्टस अखबारो मे या पार्लिमेंट मे न आए कि मिलिट्री स्टोर्ज से कोई चीज गयाब हो गई है ..

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : गायब हो जाए और खबर न आए ?

श्री सतपाल कपूर . मैं तजवीज कर रहा हू कि सुपरविजन को मजबूत करे, उसको ठीक करे ताकि चोरिया न हो । जो लोग इस किस्म की कार्रवाई करते हैं उनको आप रोके । सियासी, गैर सियासी, डैस्ट्रक्टिव, पोलिटिकल, नान-पोलिटिकल सभी किस्म के लोग हो सकते है । उनको आप रोके ।

श्री मधु लिमये · (बाका) यहा नही आनी चाहिये ये खबरे ?

श्री सतपाल कपूर · चोरिया होगी तो रिपोर्ट आएगी ही । अगर सुपरविजन मजबूत होगा तो चोरिया नही होंगी और रिपोर्ट भी नही आएगी । मेरा कहने का यह मतलब नही है कि चोरिया होने दे और

[श्री सतपाल कपूर]

रिपोर्टस न आने दे । मैं हैरान हू कि आपको और अटल बिहारी जी को क्या हो गया है ।

जहा मिलिट्री सुप्रेमेसी एस्टैबलिश हो रही है वहां जरूरत इस बात की भी है कि आप अपना कट्रोल मजबूत करें ताकि इस किस्म के वाकात न हो ।

दूसरी मेरी तजवीज यह है कि इनक्वायरी कम्प्लीट होने के बाद जिस किसी को सजा मिले या एक्शन लिया जाए या यह पता चल जाए कि कैसे यहा से चोरी हुई, उसकी एक मुकम्मिल रिपोर्ट हाउस के सामने आप दे ताकि मैम्बर जान सके कि इस मे क्या एकशन लिया गया है ?

श्री विद्याचरण शुक्ल माननीय सदस्य की जहा तक दूसरी बात का ताल्लुक है मैं मजूर करता हू कि जैसे ही हमारे पास इसके बारे मे मुकम्मिल सूचना आ जाती है और हम कार्रवाई करने है तो उसकी सूचना हम सदन को दे । ऐसा हम अवश्य करेंगे क्योकि यह मामला सदन मे उठाया गया है और यह उपयुक्त होगा कि जब इनक्वायरी मुकम्मिल हो जाए तो सदन को इस की सूचना दी जाए ।

दूसरी बात इस मसले से सम्बन्ध नही रखती है । माननीय सदस्य की यह बात अपने स्थान पर ठीक हो सकती है । हम माल बना करके स्थल, जल या वायु सेना को दे देते है और वे अपने आर्डनेंस डिपोज मे उन चीजों को रखते है । वहा से , अगर कुछ चोरी होता है इधर उधर गडबड होती है तो उसकी सुरक्षा का इंतजाम करना स्थल, जल तथा वायुसेना वालों का काम है और वे इसको करते है । इसका हम लोगो से कोई मतलब नही है । लेकिन जो बात आपने उठाई है कि इस मे सुरक्षा व्यवस्था अच्छी होनी चाहिये इस बात को जो लोग इसके इचार्ज है उनको मैं आपकी भावनाओं से अवगत करा दूगा ।

SHRI VIKRAM MAHAJAN (Kangra): The theft of this instrument raises a broader question regarding the security of our defence stores, installations, laboratories and so forth. Surely it is not the case of any one that this instrument, this particular instrument was meant for sport or anything. It had certain defence implications. It was a sophisticated equipment. Nobody who stole it took it for the purpose of decorating his drawing-room or anything like that, or, as a piece of art. It was meant for a specific purpose Therefore it cannot be lightly treated We have had a series of incidents wherein Defence stores were involved. Recently we had recovery of bombs which had defence markings and now it is a case of this instrument Some of us have a feeling that there is a regular conspiracy going on by virtue of which certain interested parties are collecting these defence and sophisticated equipments so that at some crucial time they can create some sort of unrest in the country and it is part of a conspiracy. There are various such thefts which are going on and this raises a broader question In the context of these factors, may I know whether some sort of high-powered enquiry will be conducted into the working of the Security system of the defence stores, defence installations, laboratories etc., I want the Minister to tell us whether he is prepared to have this sort of High-powered enquiry into the whole security system of our defence installations, laboratories and stores. Does he think it is any case of internal sabotage or does he think there is the hand of some foreign power in these thefts which are going on in respect of sophisticated equipments of the Defence Forces?.

श्री विद्याचरण शुक्ल मैं, पहले बाजपेयी जी ने एक सवाल पूछा था उनका जवाब देना चाहता हूं । मुझे अभी सूचना मिली है कि टेलीस्कोप को काम पर से 14 मार्च को हटाया गया था और पेक करके रखा गया था और जो सज्जन लेने आए वह ग्यारह

अप्रैल को। तब इस चोरी का पता लगा। हो सकता है कि तेरह मार्च की यह बात अखबारों में छपी हो।

महाजन जी ने जो सवाल पूछा है उसके बारे में मैं नहीं जानता कि ये जो बम थे उन पर डिफेंस मार्किंग थे या नहीं। इसके बारे में सदन में पहले जवाब दे दिया गया है और गृह मंत्रालय के द्वारा उसकी जांच पड़ताल की जा रही है। उससे जिस बात का पता लगेगा उसको हम अपने ध्यान में रखेंगे। जहां तक अस्त्रों की सुरक्षा का सवाल है इसके बारे में हम सोचते विचारते रहते हैं और इसका विचार हम अवश्य करेंगे।

मैं नहीं मानता हूं कि कोई रेगुलर कांस्पिरेसी चल रही है और चोरी चपाटे से इन चीजों को ले कर देश में इकट्ठा करके गड़बड़ करने की कोशिश की जा रही है। मैं नहीं चाहता हूं कि इस तरह की बात कह कर आतंक पैदा किया जाए और हौवा खड़ा किया जाए। इसे नुकसान हो सकता है। हमारे यहां सुरक्षा की जो व्यवस्था है वह अच्छी है। उसको और ठीक किया जा सकता है और ज्यादा सुधारा जा सकता है। जहां कहीं कमजोरी हम देखते हैं निरंतर रूप से उसको ठीक करते रहते हैं। इस तरह की जब दुर्घटना होती है तो इससे हमें जो कमजोरी होती है उसका पता लगता है और उसको सुधारने की हम कोशिश करते हैं। मैं मानता हूं कि सुधार की गुंजाइश हर जगह रहती है। लेकिन मैं इस बात को नहीं मानता हूं कि सुरक्षा में कुछ इस तरह की कमजोरी है जिस की वजह से कोई राष्ट्र व्यापी कांस्पिरेसी इस तरह की चल रही है कि इन चीजों की चोरी की जाए।

SHRI MOHANRAJ KALINGARAYAR (Pollachi): I am really ashamed when the emergency is still going on, it is not lifted yet, such a matter like this concerning the defence and its security is discussed in this House. Sir, it may be an article the cost of which may not be much, but that is not the matter at issue. It may be just on ordinary talescope. But what I would like to know is this. How does this article get out of the security line of the Defence Establishment?

Now that the Minister said that the article appeared in the newspapers was not correct I want to ask a question. This is a highpowered and sophisticated telescope valued at Rs. 1.80 lakhs whereas the Minister put its value at Rs. 36,000 or so.

I want to know what is the range of this telescope. He said that this is a special type of telescope. This sort of telescope is used for testing the long-range 8 m.m. mortars and 120 m.m. mortars. By using the telescopes We will be able to find out where the bullets are hit though, of course, it takes time. This is a big size telescope and, as Mr. Vajpayee said, it cannot be just removed so easily. How is it that they found this article missing in the Defence Establishment especially when it is being looked after by the Defence Security Force. In every establishment there is a defence security force staying there They live there like any other armed force. Without a voucher and without obtaining the signature how can such an article be taken out when the unit is heavily guarded? This is one of the best experimental establishments for the entire India. This telescope is located in the store room of a Defence installation at Chandipore which is 77 miles away from Balasore. In the year 1896 this establishment was established. I am ashamed to see that this is being discussed which involves the security of this country I would like the Minister to tell us if any service officers are involved or civilians are involved. This

[Shri Mohanraj Kalingarayar]

is an Establishment where the civilians also participate inside the units. I would like to know whether they suspect any civilians who have a hand in it Whatever little information that I have got, I think that there is some misunderstanding between the Commandant and the Civilian Defence employees. The last Commandant of the Unit, Lt Col Prakash Singh and the present Commandant have requested many a time to eliminate some of the mischief mongers from this unit due to security reasons But, the same was overlooked.

Therefore, I want to know whether it is a fact that due to this, the Commandants are also on leave since the last few months Also I want to know whether it is correct or not that during a public meeting sometime in January 1974, some of the employees had discussed some of the defence problems at that public meeting I want the Minister to specifically say whether it is politically motivated by some political parties Some of the aspects of the working of the defence side were discussed in that public meeting Even that should we investigated and proper action should be taken I would like the hon Minister to answer all the points that I have raised

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA Many questions that the hon Member asked would be answered after we have completed the enquiries as to how that had happened and whether the service officers or civilian personnel were involved in this etc The enquiries are going on still.

As regards the range of the telescope, I have not got with me the specific information. But, I must say that the range must be adequate for our purpose. It was a good equipment I must tell the House that this equipment was imported from U.K. in the year 1968 We have now ourselves under development a similar equipment which will perform the same function or, rather, will do the same work in our Instrument Laboratory in Dehra Dun And very soon, we shall be producing the same kind of telescopes in our country also. I do not know if any report was sent by the Commandant of this range to us. But I should like to assert here that if any such recommendation is sent that a particular employee is endangering the security of a particular defence establishment we take immediate steps and see to it that employee is removed from the service or from the establishment I will not accept this information that the Commandant of this establishment sent information and we did not take any action. Nonetheless as the hon Member has mentioned about it I will look into the matter

As regards speeches because of the Inter-Union rivalry certain speeches might have taken place but no such defence secret which calls for any action was revealed in this meetings. Although we disliked these things being discussed in the public yet we did not take any action.

श्री मधु लिमये अध्यक्ष महोदय मैं माननीय सदस्यों की इस बात से सहमत हू कि जहा तक हमारी हवाई सेना, नाविक दल और स्थल सेना के जवानों और अफसरो का सवाल है, उन के कौशल और बहादुरी के बारे मे इस सदेश में दो राये नहीं हो सकती है। लेकिन अनुसन्धान और उत्पादन सबधी जो प्रतिष्ठान एस्टाब्लिशमेंटस हैं, और सुरक्षा का जो सप्लाई विभाग है, उन मे एक अरसे से ऐसे आमार नजर आ रहे हैं कि वहा धाधलिया और गडबडिया बहुत हैं। मत्री महोदय जानते हैं कि मैं उन की जानकारी में एक मामला लाया था, जिस में एक अस्थायी रिसर्च आफिसर को कुछ लोगों के द्वारा तग किया जा रहा था मत्री महोदय ने कहा कि वह बहुत ही अच्छा रिसर्च आफिसर है और हम लोगों ने उस को आगे बढ़ाने की भी कोशिश की है। मैं यह उदाहरण के तौर पर बता रहा हूं कि इस तरह की बाते अनुसन्धान प्रतिष्ठानों में भी

धीरे-धीरे आने लगी हैं। इस में सुरक्षा का बहुत बड़ा सवाल है। कुछ दिन पहले इसी सदन में कानपुर में मिले बमों का मामला उठाया गया था। उस के बाद पता चला कि उत्तर प्रदेश में और एक जगह इसी तरह के बम पाये गये, जो आर्डिनेंस डिपो से गायब हुए थे।

दो तीन दिन पहले, जब मैं दौरे पर था, मैं ने यह खबर पढ़ी थी कि बम्बई में चेम्बूर के पास माहूली नाम के गांव में एक बच्चे को दो सबमेरिन विध्वंसक बम मिले बाद में पुलिस ने उन को कब्जे में ले लिया और अब नाविक दल के लोग उस के लोग उसने बारे में जांच कर रहे हैं। क्या मंत्री महोदय इन प्रतिष्ठानों के सिक्यूरिटी संबंधी नियमों और रेगुलेशन्ज के बारे में एक नये ढंग से और आधुनिक दृष्टिकोण से सोचेंगे ताकि इस तरह की गड़बड़ियों को रोका जा सके?

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि बालेश्वर में यह जो प्रतिष्ठान था प्रूफ ऐंड एक्सपेरिमेंटल एस्टैब्लिशमेंट क्या उसके आस पास ऐसे निजी कारखाने या किसी एस्टैब्लिशमेंट्स वगैरह हैं क्यों इसके बारे में आप लोगों का नियम भी है कि आस पास इस तरह का कुछ नहीं रहना चाहिए लेकिन बड़े लोगों के रिश्तेदारों के लिए आप इन नियमों को तोड़ते भी हैं जैसे गुड़गांवा के कारखाने मारूति लिमिटेड के बारे में आप ने किया .... (**व्यवधान**) ..घबड़ाने की जरूरत नहीं है, मैं इस समय मारूति के बारे में कुछ नहीं कहने जा रहा हूं। ... (**व्यवधान**) ... कुछ लोगों को मा शब्द से ही नफ़रत है चाहे मारूति हो चाहे कुछ हो..... (**व्यवधान**) ....

श्री वसंत साठे (अकोला) : हमें तो नफरत नहीं है लेकिन आप क्यों रोते हैं ?

श्री मधु लिमये : मैं यह कह रहा था कि क्या इस तरह के कोई निजी प्रतिष्ठान आसपास हैं और क्या मंत्री महोदय इस पहलू पर भी विचार करेंगे कि क्या यह दूरबीन विदेशों में तो नहीं चली गई है ? क्योंकि देश में क्या निजी लोग इसका इस्तेमाल करेंगे ? यह समझ में नहीं आ रहा है। अब मजाक में तो बात कही गई कि शायद यूथ कांग्रेस निगरानी रख रहा है आर० एस० एस० पर या आर० एस० एस० यूथ कांग्रेस पर निगरानी रख रहा है। लेकिन मेरा कहना यह है कि मंत्री महोदय इस पहलू को भी विचार कर लें कि क्या यह विदेशों में चली गई है ? अगर चली गई है तो फिर इनका कस्टम उस पर क्या कर रहा है? इसमें बहुत सारे मामले निकलते हैं, इसलिए इसकी पूरी जांच होनी चाहिए।

अन्तिम बात मैं यह कहना चाहता हूं कि जब इस तरह के मामले सदन के सामने आते हैं तो मंत्री महोदय आश्वासन देते हैं कि जांच वगैरह की जा रही है, लेकिन बाद में क्या किया जाता है उसके बारे में मंत्रियों के द्वारा सदन के सामने कोई रपट नहीं रखी जाती। सदस्य भी भूल जाते हैं और मंत्री भी भूल जाते हैं। इसलिए क्या आप इस तरह का आश्वासन देंगे कि कानपुर वाला मामला या यह चेम्बूर वाला मामला जो सबमेरिन विध्वंसक बम के बारे में है, इस तरह के जितने मामले हैं, उनकी जांच पूरी होने के बाद उसके निष्कर्ष सभा के सामने रखे जाएंगे?

श्री विद्याचरण शुकल: यह जो दूरबीन थी उसे उपयोग में लाया जाता था तोपें जो चलायी जाती थीं उनकी टेस्टिंग के लिए या उनकी एलाइनमेंट ठीक है या नहीं है यह देखने के लिए और जो माननीय सदस्य ने बात कही बम की जो उत्तर प्रदेश में पाया गया और चेम्बूर में पाया गया उसके बारे में जैसा मैंने पहले कहा गृह मंत्रालय के द्वारा जांच हो रही है। उनकी जांच पूरी हो जाने के बाद यदि सुरक्षा मंत्रालय का कुछ संबंध आता है या हमारे किसी प्रतिष्ठान का संबंध आता है या हमारे किसी ऐसे मेटीरियल का

[श्री विद्याचरण शुक्ल]

संबंध आता है तो हम उसमें जो कार्यवाही ठीक होगी वह अवश्य करेंगे ।

जहां तक उसके बारे में सदन को अवगत कराने की बात है मैंने इस बात का आश्वासन दिया है पहले सतपाल कपूर ने जब प्रश्न पूछा था कि इसके जो भी निष्कर्ष निकलें और उस पर जो भी कुछ कार्यवाही करें उससे हम सदन को अवगत कराएं तो यह आश्वासन हमने दिया है कि हम उससे अवगत करायेंगे और जो हमारी आश्वासन समिति है वह इस आश्वासन का ध्यान रखेगी कि इसमें कोई गड़बड़ न हो और इसे पूरा किया जाये ।

जहां तक बालासोर प्रतिष्ठान के आस-पास दूसरे निजी प्रतिष्ठान होने का सवाल है जहां तक मेरी निजी सूचना है वहां पर ऐसी कोई चीज नहीं है । यदि कोई ऐसी चीज होगी तो हम उसका ध्यान रखेंगे लेकिन जहां तक मैं जानता हूं वहां कोई ऐसा प्रतिष्ठान नहीं है जो इतने आसपास हो कि जिस पर शक करें ।

श्री सतपाल कपूर : इसकी स्क्रैप वैल्यू कितनी है ? कहीं स्क्रैप के रूप में किसी ने उसे न बेच दिया हो ।

श्री विद्याचरण शुक्ल : यह भी हो सकता है । लेकिन इसके लिए तो कुछ कहना मुश्किल है क्योंकि हम स्क्रैप बेचते नहीं है । इसका वजन करीब 25 किलोग्राम था इस टेलीस्कोप का और इसका डाइमेंशन करीब 20 इंच से लेकर दस इंच और दस इंच चौड़ाई इस प्रकार से था । यह पास देखने की चीज थी क्योंकि गन का एलाइनमेंट उससे देखते थे कि जो फायरिंग होगी वह ठीक होगी या नहीं, वह देखने की चीज थी । जैसा मैंने पहले कहा, इस तरह के टेलीस्कोप को भारतवर्ष में बनाना हम प्रारम्भ करने वाले हैं और यह ऐसी कोई चीज नहीं है कि जिसके एक बार गुम हो जाने के बाद इसको फिर से पाया न जा सके ।

12.51 hrs.

RE. MOTION OF ADJOURNMENT (*Query*)

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur): I have given notice of an adjournment motion.

MR. SPEAKER: How is it? Some strike is coming after many days and you give notice of an adjournment motion?

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour): Your hon. members won't be able to go back home because of the impending strike.... (*Interruptions*).

MR. SPEAKER: I am sorry.

PROF. MADHU DANDAVATE (Rajapur): On this issue, during your absence, the Deputy-Speaker had given a ruling. I would like to draw your attention to that. He said the Minister was meeting the labour leaders on the 18th. After that, Shri Jyotirmoy Bosu said that we want an assurance from the horses's mouth. The Deputy-Speaker observed that the 'horse himself would come to the House and from the horse's mouth you will hear'. After the 18th, we were expecting to hear this from the horse's mouth (*Interruptions*).

MR. SPEAKER: Please sit down. Some notice is given of a strike. I do not know.

PROF. MADHU DANDAVATE: You kindly go through the records.

MR. SPEAKER: You must, after all, be reasonable. The rules provide certain conditions. It must relate to a matter of urgent public importance of recent occurrence. There is no occurrence. Some notice is given of an impending strike, whether the strike will occur or not, whether negotiations will succeed or not, you are worried about an adjournment motion even before that!

SHRI S. M. BANERJEE: On a point of order.

MR. SPEAKER: No point of order.